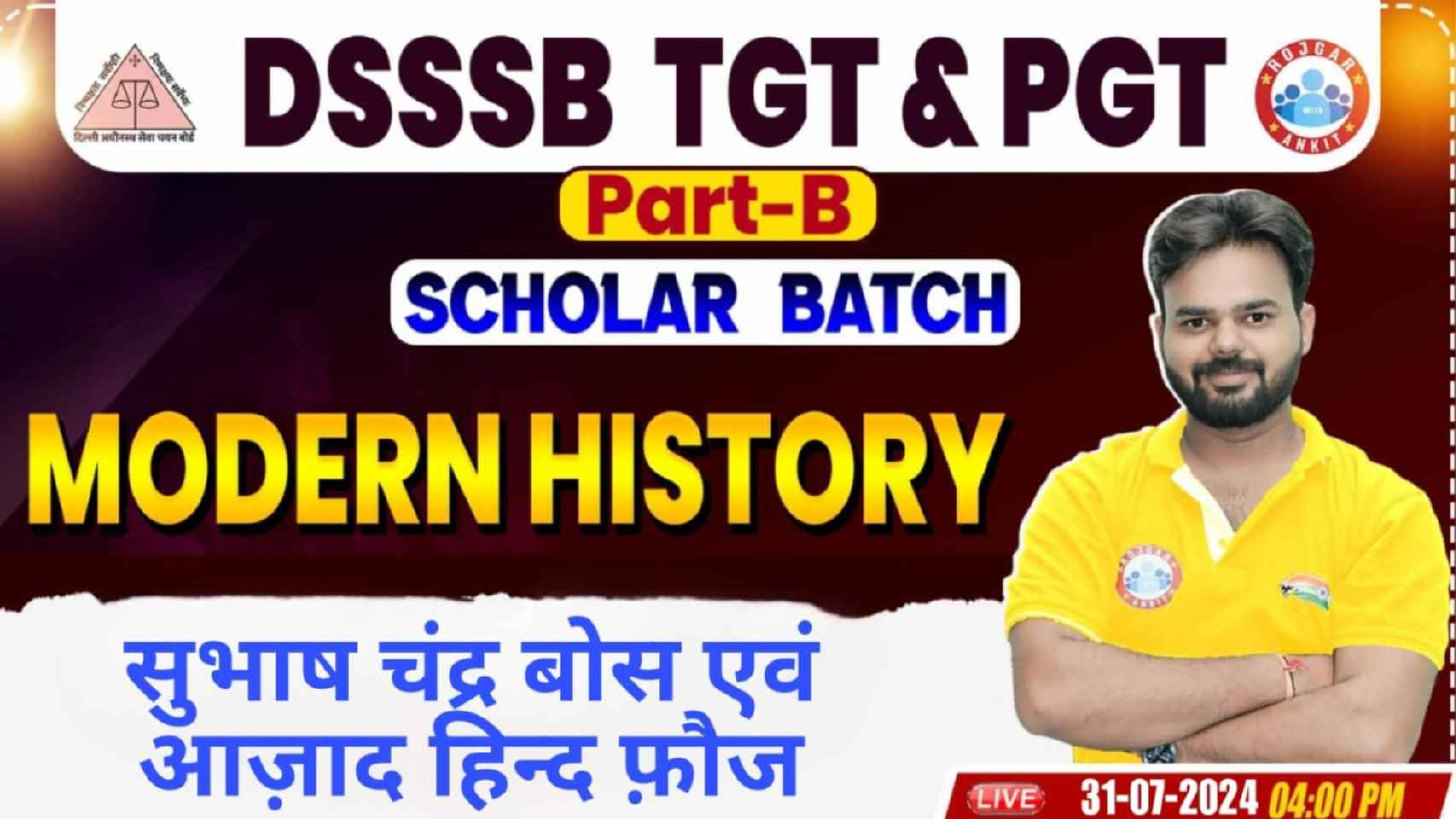

दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
DSSSB TGT & PGT
ROJGAR WITH ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
MODERN HISTORY
सुभाष चंद्र बोस एवं
आज़ाद हिन्द फ़ौज
LIVE
31-07-2024 04:00 PM

OSSSB - TGT

Subject = SST

- ✓ आधुनिक भारत का इतिहास Complete ✓
- ✓ विश्व भूगोल Complete
- ✓ भारतीय भूगोल "
- ✓ संविधान "
- ✓ राजनीतिक विज्ञान "
- ✓ अर्थव्यवस्था "

15 August

Gap

(Revision Period)

(MCQ + PYQ + किरन SSC GS)

विश्व इतिहास + शेष टॉपिक ✓

(10 Classes

- राजेन्द्र प्रसाद इस समय तक बंबई नहीं पहुंच सके थे, इसलिये उन्हें पटना में ही गिरफ्तार कर बांकीपुर जेल में कैद कर लिया गया था।

- आगा खां पैलेस में गांधी जी के साथ उनके सचिव महादेव देसाई भी थे, जिनकी मृत्यु दिल का दौरा पड़ने के कारण 15 अगस्त, 1942 ई० को हो गई। उनकी प्रसिद्धि इस कारण से रही थी कि वे लंबे समय तक (लगभग 25 वर्ष) गांधी जी के निजी सचिव के रूप में भूमिका अदा कर रहे थे।

- उन्होंने अपने समय तक की राष्ट्रीय आंदोलन पर डायरी भी लिख रहे थे।

- निधन के उपरांत महात्मा गांधी की इच्छानुसार आगा खां के महल में ही उनकी समाधि बनवाई गई।

- उनकी मृत्यु के बाद प्यारेलाल नैय्यर उनके सचिव के रूप में उनके साथ रहे और गांधी जी के अंतिम दिनों का विवरण उन्होंने लिखा ।

- उल्लेखनीय है कि इन्हीं की बहन सुशीला नैय्यर गांधी जी के निजी डॉक्टर के रूप में कार्य करती थीं।

- गांधी जी के साथ जिन अन्य लोगों को आगा खां पैलेस में इस दौरान रखा गया था, उनमें से एक प्रसिद्ध नाम मीरा बेन का है, जिनका मूल नाम मैडलिन स्लेड था ।

- वह एक ब्रिटिश सैन्य अधिकारी की बेटी थीं। इन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधी जी के सिद्धांतों से प्रभावित होकर खादी का प्रचार-प्रसार करती थी।

- आंदोलन के नेतृत्वविहीन होने के बावजूद भी यह आंदोलन जनता के स्वप्रयासों से प्रारंभ हो गया और ब्रिटिश सरकार को ज़ोरदार चुनौती प्रस्तुत की गई ।

- शहरों और गांवों में लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी और उनकी पुलिस और फौज़ के साथ जमकर लड़ाई हुई। सरकार ने जब आंदोलन को कुचलने के लिए लाठी और बंदूक का सहारा लिया, तो आंदोलन का रुख बदलकर हिंसात्मक हो गया। लोगों ने उन खास खास जगहों पर हमला किया, जिन्हें उन्होंने अंग्रेज़ी राज व उसकी हुकूमत का केंद्र समझा, यथा- पुलिस चौकियां, डाकखाने और स्टेशन | लोगों ने बिजली और टेलिफोन के तार काट डाले ।

- इसी आंदोलन के दौरान रेल की पटरी उखाड़ने की घटनाएं घटित हुई। करीब-करीब हर प्रांत में और हिंदुस्तान की सभी रियासतों में सरकारी रोक के बावजूद अनगिनत प्रदर्शन व हड़तालें हुई, दुकानें और बाज़ार बंद हुए, कामकाज बंद रखा गया। इस तरह की घटनाएं सभी जगह हुआ। कुछ जगहों पर यह कुछ दिनों तक चला, कहीं-कहीं कुछ सप्ताह तक और कुछ जगहों पर यह एक महीने से भी ज़्यादा चला। इसी तरह मज़दूरों की भी हड़तालें हुई। बंबई, अहमदाबाद एवं जमशेदपुर में मज़दूरों ने संयुक्त रूप से विशाल हड़ताल की।

- राष्ट्रीय नेताओं को गिरफ़्तार करने की सरकार की कार्रवाई के विरोध में बहुत-सी खास जगहों पर कारखानों के मज़दूरों ने एक साथ हड़ताल का ऐलान कर दिया। ये लोग ज्यादा संगठित थे और इनमें आपस में मिलकर काम करने का हौसला था |

- जो कांग्रेसी नेता गिरफ़्तार नहीं हो सके, उन्होंने गुप्त रूप से असंगठित जनता को निर्देश दिए।

- इसमें जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया तथा अरुणा आसफ अली के नाम प्रमुख है। इस तरह की सर्वाधिक घटनाएं बिहार में हुई।

❖ 9 नवंबर को जयप्रकाश नारायण 5 आदमियों के साथ हजारीबाग सेंट्रल जेल से भाग निकले। उन्होंने 'केंद्रीय संग्राम समिति' बनाकर अंग्रेज़ों से सशस्त्र संग्राम का आह्वान किया।

- कुल मिलाकर, यहां से आंदोलन की बागडोर अच्युत पटवर्धन, अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी, राममनोहर लोहिया, बीजू पटनायक, ए०के० गोपालन, युसूफ मेहर अली, जयप्रकाश नारायण जैसे समाज वादियों के हाथों में रही ।

- अंततः ब्रिटिश सरकार ने इसका भी अन्य आंदोलनों की तरह दमन कर दिया।

आंदोलन की विशेषताएं

a. इस आंदोलन की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता इसका नेतृत्वविहीन होना था।

b. इस आंदोलन के दौरान अनेक आंदोलनकारियों ने भूमिगत रहकर रेडियो के माध्यम से अपने विचारों को आम जनों तक पहुंचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

- राम मनोहर लोहिया, बी०एम० खादर, नार्दीमन अल्वाद (पेंटर) और ऊषा मेहता उन अग्रणी सदस्यों में से थे, जिन्होंने आंदोलन के दौरान सूचना एवं प्रसारण के कार्यक्रमों की व्यवस्था की।

- रेडियो स्टेशन के दो प्रधान केन्द्र नासिक और बंबई था। ऐसे रेडियो स्टेशन से सर्वप्रथम ऊषा मेहता ने जनता को संबोधित किया था।

- राममनोहर लोहिया अक्सर रेडियो स्टेशन से बोला करते थे।

- ऐसे रेडियो स्टेशन से जो बुलेटिन प्रसारित किए जाते थे, उसे 'डू और डाई बुलेटिन' कहा जाता था ।

- ऐसे रेडियो स्टेशन से जो कार्यक्रम प्रसारित किया जाता था, उसे 'वॉयस ऑफ फ्रीडम' कहा जाता था।

- इसी आंदोलन के दौरान देश के कुछ भागों में आंदोलनकारियों ने समानांतर सरकार की स्थापना की। ऐसी सरकार सर्वप्रथम बलिया में चित्तु पांडेय के नेतृत्व में बनी थी।

- सतारा में विद्रोह का नेतृत्व नाना पाटिल ने किया था। सतारा के सबसे महत्त्वपूर्ण नेता वाई०बी० चव्हाण थे। सतारा की राष्ट्रीय सरकार सर्वाधिक दीर्घजीवी सिद्ध हुई, जो कि 1945 ई० तक कार्य करती रही।

- बंगाल के ताम्लुक नामक स्थान पर भी ऐसी सरकार स्थापित किया गया था। यहां की सरकार को 'जातीय सरकार' के नाम से जाना जाता था।

- सतीश सावंत के नेतृत्व में गठित इस जातीय सरकार ने स्कूलों को अनुदान दिए और 'सशस्त्र विद्युत वाहिनी सैन्य संगठन' बनाया।

- उड़ीसा में तलचर नामक स्थान पर लोगों ने अपने स्वराज्य की स्थापना की।

d. अन्य आंदोलनों के विपरीत यह आंदोलन गांधीजी के अहिंसक रहने के आहान के बावजूद प्रारंभ से ही हिंसक रहा।

e. प्रारंभ में यह आंदोलन शहरी इलाकों में ही प्रचारित था। परंतु शीघ्र ही इसका प्रसार ग्रामीण क्षेत्रों तक भी हो गया।

f. भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी भी काफी उल्लेखनीय रही। पिछले कई आंदोलनों में उनकी भागीदारी ने आंदोलन के सामाजिक आधार को विस्तृत बनाने में काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी।

- इस आंदोलन में जिन महिलाओं ने भाग लिया, उसमें सर्वाधिक उल्लेखनीय नाम अरुणा आसफ अली का था। उन्हें 'सन् बयालीस की रानी झांसी' कहकर संबोधित किया गया।

- ब्रिटिश सरकार ने अंत में परेशान होकर उनका सुराग देने वालों को 5000 रुपये इनाम के तौर पर देने की घोषणा कर डाली।

- इस आंदोलन के दौरान एक अन्य महिला मातंगिनी हजारा का प्रदर्शन भी बड़ा ही क्रांतिकारी रहा। मातंगिनी हज़ारा ने अधिकांशतया महिला स्वयंसेविकाओं वाले लगभग 6000 समर्थकों को साथ लेकर ताम्लुक पुलिस स्टेशन पर नियंत्रण हेतु एक जुलूस निकाला। अंग्रेज़ों ने उन्हें रोकने की कोशिश की, परंतु वह एक न सुनी। तब 29 सितंबर, 1942 ई० को पुलिस ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी।

- मातंगिनी हज़ारा को गांधीवादी विचारधारा में उनके विश्वास के कारण 'बूढ़ी <u>गांधी'</u> (Old lady Gandhi) भी कहा जाता है।

विभिन्न वर्गों की प्रतिक्रिया

a. मुस्लिम लीग ने इस आंदोलन की यह कहकर आलोचना की थी कि यह आंदोलन वास्तव में भारत में स्वतंत्रता के लिए नहीं, बल्कि हिंदू राज्य की स्थापना करने के लिए चलाया जा रहा है।.

b. बी०आर० अंबेडकर ने इसे 'अनुत्तरदायित्वपूर्ण और पागलपन भरा क़ार्य' बताकर इसकी आलोचना की।

c. हिंदू महासभा और अकाली दल ने भी आलोचना की।

d. श्रमिक वर्गों ने अपनी प्रतिक्रिया दिखाते हुए विभिन्न औद्योगिक केन्द्रों में हड़तालें की।

e. सबसे हास्यास्पद भूमिका साम्यवादियों की रही, जिन्होंने आरंभ में इसका समर्थन किया, परंतु ज्योंहि रूस मित्र राष्ट्र की ओर से इस युद्ध में शामिल हुआ, त्यहि वह भारत छोड़ो आंदोलन का विरोध करने लगा।

f. कांग्रेस के अतिरिक्त और जिन दलों व समुदायों ने इस आंदोलन को अपना समर्थन प्रदान किया, वे समाजवादी एवं पारसी थे

- समाजवादियों की भूमिका सबसे अधिक सकारात्मक रही, उन परिस्थितियों में, जबकि कांग्रेस के सभी प्रमुख नेता को गिरफ़्तार कर लिया गया था।

आंदोलन की असफलता के प्रमुख कारण

a. आंदोलन का एकाएक नेतृत्वविहीन हो जाना ।

b. आंदोलन का सभी वर्गों का समर्थन प्राप्त न हो पाना ।

c. आंदोलन का ब्रिटिश सरकार के द्वारा अंधाधुंध दमन किया जाना ।

d. आंदोलन का हिंसक हो जाना।

सी०आर० फॉर्मूला (10 जुलाई, 1944 ई०)

- भारत छोड़ो आंदोलन के बलपूर्वक दमन के बाद भारतीयों द्वारा आपसी समझ-बूझ स्थापित करने हेतु स्वयं प्रयास किया गया |
- इसी के परिणामस्वरूप 'सी०आर० फॉर्मूला' अस्तित्व में आया।
- इसे प्रसिद्ध गांधीवादी चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने तैयार किया। इसमें निम्नलिखित बातें की गई थी-

1. मुस्लिम लीग के द्वारा भारत की स्वतंत्रता की मांग का समर्थन किया जाए।

2. स्वतंत्रता की प्राप्ति के पश्चात् एक आयोग का गठन किया जाए, जो कि भारत के उत्तर-पश्चिम व उत्तर-पूर्व में मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र में सीमांकन करेगा। इसमें इस बात का जनमत संग्रह होगा कि वह पाकिस्तान में रहना चाहता है अथवा भारत में।

3. विभाजन की स्थिति में रक्षा, व्यापार और संचार व्यवस्था पर दोनों मिल-बैठकर समझौता करेंगे।

- मोहम्मद अली जिन्ना ने इस फॉर्मूला को स्वीकार करने .से इंकार कर दिया।
- उनके अनुसार - "इसमें लुंज-पूंज और भूसा जैसा पाकिस्तान दिया गया है। इसमें गाड़ी को घोड़े से पहले लगाया गया है।"
- दूसरे शब्दों में, एक तरफ जहां कांग्रेस पहले आज़ादी चाहती थी, वहीं दूसरी तरफ मुस्लिम लीग पहले विभाजन चाहती थी और फिर आज़ादी।

देसाई - लियाकत पैक्ट (अप्रैल, 1945 ई०)

- भूलाभाई देसाई, जो कि केन्द्रीय विधान परिषद् में कांग्रेस के नेता थे, ने लियाकत अली, जो उस समय परिषद् में मुस्लिम लीग के उपनेता थे, से अप्रैल 1945 ई० में एक समझौता किया, जिसे ही 'देसाई -लियाकत पैक्ट' कह कर पुकारा गया।

- इसके अंतर्गत केन्द्र में जिस एक अंतरिम सरकार के गठन की बात की गई उसमें कांग्रेस व मुस्लिम लीग के बराबर-बराबर प्रतिनिधि हो तथा जिसमें अल्पसंख्यकों के प्रतिनिधि तथा कमांडर इन चीफ के भी कुछ सदस्य शामिल हों। मुस्लिम लीग ने इसे भी मानने से इंकार कर दिया।

वेबेल योजना

- भारत के वायसराय लॉर्ड वेबेल के द्वारा 14 जून 1945 ई० को द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीयों का सहयोग प्राप्त करने के लिए एक योजना प्रस्तुत की गई, जिसे 'वेबेल योजना, कहकर पुकारा जाता है।

- इसमें वायसराय की कार्यकारिणी के सारे सदस्यों के भारतीय हो जाने की बात की गयी थी। इसमें हिंदू और मुस्लिम दोनों समान संख्या में शामिल होने थे।

- इसके अंतर्गत एक युद्ध सलाहकार परिषद् के गठन की बात भी की गई थी, जो युद्ध के संचालन के साथ-साथ ऐसे उपायों पर भी विचार करती, जिससे भारत में संविधान निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो सके।

शिमला सम्मेलन

- वेबेल योजना पर विचार-विमर्श करने के लिए 25 जून, 1945 ई० को शिमला में भारत के सारे मुख्य दलों को लेकर एक सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसे 'शिमला सम्मेलन' कहकर पुकारा गया ।

- इसमें मुस्लिम लीग की यह मांग थी, कि वायसराय की कार्यकारिणी के मुस्लिम सदस्यों को चुनने का एकमात्र अधिकार मुस्लिम लीग को मिलना चाहिए। कांग्रेस ने इसे मानने से इंकार कर दिया और इस प्रकार शिमला सम्मेलन असफल रहा।

आजाद हिन्द फौज

- प्रत्येक वर्ष 21 अक्तूबर को आज़ाद हिंद सरकार के गठन की वर्षगाँठ मनाई जाती है।
- यह दिन आज़ाद हिंद सरकार नामक भारत की पहली स्वतंत्र अनंतिम सरकार की घोषणा का प्रतीक है।

▽ प्रमुख बिंदु:

▽ 21 अक्तूबर, 1943 को सुभाष चंद्र बोस ने सिंगापुर में आज़ाद हिंद (जिसे अरजी हुकुमत-ए-आज़ाद हिंद के रूप में भी जाना जाता है) की अनंतिम सरकार के गठन की घोषणा की, जिसमें वह स्वयं राज्य के प्रमुख, प्रधानमंत्री और युद्ध मंत्री थे।

- अनंतिम सरकार ने न केवल बोस को जापानियों के साथ समान स्तर पर बातचीत करने में सक्षम बनाया, बल्कि इंडियन नेशनल आर्मी (INA) में शामिल होने और इसके समर्थन के लिये पूर्वी एशिया में भारतीयों को लामबंद करने में भी मदद की।

- सुभाष चंद्र बोस ने देश के बाहर से ही स्वतंत्रता संग्राम को नेतृत्त्व प्रदान किया। उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध (1939-45) के परिणाम को भारत की स्वतंत्रता की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण अवसर माना।

- वर्ष 1940 में बोस को नज़रबंद कर दिया गया था लेकिन 28 मार्च, 1941 को वे बर्लिन भागने में सफल रहे। वहाँ के भारतीय समुदाय ने उन्हें नेताजी के रूप में सराहा। उनका स्वागत 'जय हिंद' से किया गया।

मौलवी जियाउद्दीन

सुभाषचन्द्र बोस

अफगानिस्तान

बर्लिन

आर्लैण्डो मुसैट्टे

▽ वर्ष 1942 में इंडियन इंडिपेंडेंस लीग का गठन किया गया और भारत की आज़ादी के लिये इंडियन नेशनल आर्मी (INA) के गठन का निर्णय लिया गया।

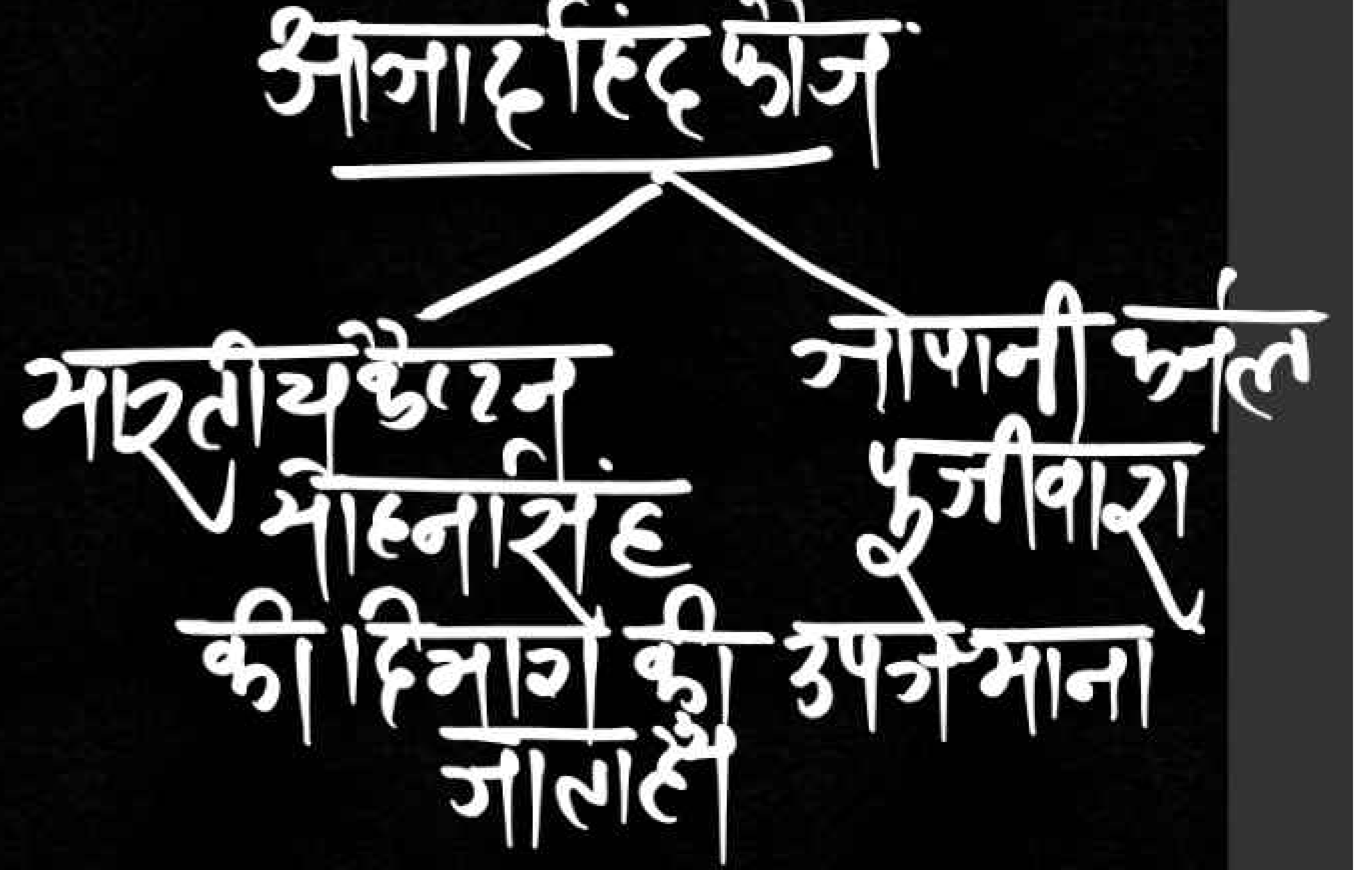

- रास बिहारी बोस के निमंत्रण पर सुभाष चंद्र बोस 13 जून, 1943 को पूर्वी एशिया आए। उन्हें इंडियन इंडिपेंडेंस लीग का अध्यक्ष और INA का नेता बनाया गया, जिसे लोकप्रिय रूप से 'आज़ाद हिंद फौज' कहा जाता है।

▽ INA का गठन पहली बार मोहन सिंह और जापानी मेजर इवाइची फुजिवारा द्वारा किया गया था और इसमें मलय (वर्तमान मलेशिया) अभियान तथा सिंगापुर में जापान द्वारा बंदी बनाए गए ब्रिटिश-भारतीय सेना के सैनिक शामिल थे।

▽ नवंबर 1945 में INA के लोगों पर मुकदमा चलाने के ब्रिटिश कदम के कारण पूरे देश में बड़े पैमाने पर प्रदर्शन किये गए।

सिंगापुर
मलेशिया
अण्डमान निकोबार
शहीद स्वराज

सभी प्रमुख नेताओं ने वकालत की
वकीलों का नेतृत्व भूलाभाई देसाई

'लालकिला केस' के नाम से जाना जाता है।

शहनवाज खान
पी.के. सहगल
गुरबक्स ढिल्लन

- उन्होंने प्रसिद्ध नारा 'दिल्ली चलो' दिया। उन्होंने भारतीयों को स्वतंत्रता का वादा करते हुए कहा, 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा' ।

सुभाष चंद्र बोस

- जन्म:
- सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को उड़ीसा के कटक शहर में हुआ था। उनकी माता का नाम प्रभावती दत्त बोस (Prabhavati Dutt Bose) और पिता का नाम जानकीनाथ बोस (Janakinath Bose) था।

- उनकी जयंती 23 जनवरी को 'पराक्रम दिवस' के रूप में मनाई जाती है।

शिक्षा और प्रारंभिक जीवन:

- वर्ष 1919 में उन्होंने भारतीय सिविल सेवा (ICS) की परीक्षा पास की थी। हालाँकि बाद में बोस ने सिविल सेवा से त्यागपत्र दे दिया।

- सुभाष चंद्र बोस, विवेकानंद की शिक्षाओं से अत्यधिक प्रभावित थे और उन्हें अपना आध्यात्मिक गुरु मानते थे

- जबकि चितरंजन दास (Chittaranjan Das) उनके राजनीतिक गुरु थे।

- वर्ष 1921 में बोस ने चित्तरंजन दास की स्वराज पार्टी द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र 'फॉरवर्ड' के संपादन का कार्यभार संभाला और बाद में अपना खुद का समाचार पत्र 'स्वराज' शुरू किया।

कॉन्ग्रेस के साथ संबंध:

- उन्होंने बिना शर्त स्वराज (Unqualified Swaraj) अर्थात् स्वतंत्रता का समर्थन किया और मोतीलाल नेहरू रिपोर्ट (Motilal Nehru Report) का विरोध किया जिसमें भारत के लिये डोमिनियन के दर्जे की बात कही गई थी।

- उन्होंने वर्ष 1930 के नमक सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया और वर्ष 1931 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के निलंबन तथा गांधी-इरविन समझौते पर हस्ताक्षर का विरोध किया।

- वर्ष 1930 के दशक में वह जवाहरलाल नेहरू और एम.एन. रॉय के साथ कॉन्ग्रेस की वाम राजनीति में संलग्न रहे।
- वर्ष 1938 में बोस ने हरिपुरा में कॉन्ग्रेस के अध्यक्ष के चुनाव में जीत हासिल की।

- वर्ष 1939 में पुनः त्रिपुरी में उन्होंने गांधी के उम्मीदवार पट्टाभि सीतारमैया के खिलाफ अध्यक्ष का चुनाव जीता। गांधी के साथ वैचारिक मतभेदों के कारण बोस ने इस्तीफा दे दिया और कॉन्ग्रेस छोड़ दी। उनकी जगह राजेंद्र प्रसाद को नियुक्त किया गया था।

- उन्होंने एक नई पार्टी 'फॉरवर्ड ब्लॉक' की स्थापना की। इसका उद्देश्य अपने गृह राज्य बंगाल में राजनीतिक वामपंथ और प्रमुख समर्थन आधार को मज़बूत करना था।